अमेरिका के पुस्तकालय

कैटलिन आर. मैक्वी और लॉरिंडा कीज़ लौंग

वहां सिर्फ पृष्ठों की हल्की सरसराहट और कीबोर्ड पर उंगलियों के चलने की हल्की आवाज सुनाई देती है। मद्धम सुर में बोलती हुई डायना फॉर्मवे रंगबिरंगे बाल उपन्यासों की एक गड्डी को करीने से लगा रही हैं। वह कहती हैं, ''पुस्तकालयों ने मुझे दुनिया के बारे में तो बताया ही, मेरे छोटे कस्बे से बाहर के लोगों और जगहों से भी मुझे जोड़ा।'' डायना बहुत शुरू में ही जान गई थीं कि पुस्तकालय संसार पर अपना प्रभाव छोड़ने वाले लोगों के शब्दों और विचारों से रूबरू होने की जगह है। इसीलिए उन्होंने तय किया कि वह लाइब्रेरियन बनेंगी। इस समय वह वेस्टर्न वाशिंगटन स्टेट में बेलिंगहम पब्लिक लाइब्रेरी में काम करती हैं।

अमेरिका का पहला नि:शुल्क सार्वजनिक पुस्तकालय 1833 में पीटरबॉरॉ (न्यू हैम्पशायर) में खुला जो करदाताओं के धन से चलता था। नि:शुल्क पुस्तकालय अमेरिकी संस्कृति, समाज और लोकतंत्र का आवश्यक पक्ष हैं। कैलिफोर्निया के कॉविना कस्बे की अध्यापिका मॉर्या मॉरियार्ती कहती हैं, ''पुस्तकालय इस मामले में महान हैं कि वहां सब बराबर होते हैं। अच्छा पढ़ा-लिखा होने के लिए संपन्न होना कतई जरूरी नहीं। हमारे घर में बस गुजारे लायक ही आमदनी थी लेकिन पुस्तकालय के कारण हम बिक्री के रिकॉर्ड बनाने वाली लोकप्रिय पुस्तकें, बच्चों की महंगी किताबें, नई से नई पत्रिकाएं और देशभर के अखबार पढ़ लेते थे।''

सार्वजनिक पुस्तकालयों को स्थानीय शासन से धन मिलता है। इनके संचालक वेतनभोगी और स्वयंसेवी दोनों तरह के होते हैं। किसी भी आयु वर्ग, सामाजिक स्तर या आर्थिक स्तर का व्यक्ति अलमारियों के बीच घूमते हुए पुस्तकें और पत्रिकाएं (अब तो वीडियो और डीवीडी भी) चुनकर वहीं पढ़ सकता है या चाहे तो एक निश्चित समय के लिए घर भी ले जा सकता है। पुस्तकालय के सदस्य मुफ्त में, बिना किसी टीका-टिप्पणी के, किसी प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने में पुस्तकालयकर्मियों की सहायता भी प्राप्त कर सकते हैं। बेलिंगहम में रहनेवाला कोई भी व्यक्ति पुस्तकालय का सदस्य बनकर यहां से पुस्तकें ले सकता है। पुस्तकें खोने, क्षतिग्रस्त होने या नियत तिथि के बाद लौटाने पर जुर्माना देना पड़ता है।

बच्चों की रूचि और पसंद को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय के बाल विभाग को आरामदेह और आकर्षक बनाया गया है ताकि बच्चों को पढ़ने में मजा आए। यहां मेजों और कुर्सियों की ऊंचाई कम है और दीवारों पर सुंदर सजावट है। स्कूल प्रोजेक्ट के लिए संदर्भ सामग्री के इस्तेमाल और सूचनाएं इकट्ठा करना सीखने में लाइब्रेरियन बच्चों की मदद करते हैं। बेलिंगहम लाइब्रेरी में सप्ताह में कई बार 18 महीने से लेकर 8 साल तक के बच्चों के लिए कहानी सुनाने के सत्रों का आयोजन होता है। किशोर पाठक लाइब्रेरी न्यूजलैटर निकालते हैं और पुस्तकों पर परिचर्चाएं आयोजित करते हैं। परिवारों की भागीदारी बढ़ाने और इसे आनंदप्रद बनाने की दृष्टि से कठपुतली के खेल, नाटक आदि होते हैं। वर्ष 1876 में अमेरिकी मेल्विल डेवे द्वारा विकसित डेवे दशमलव वर्गीकरण प्रणाली के अनुसार पुस्तकों को व्यवस्थित किया गया है। यह संसार की सबसे प्रचलित पुस्तकालय व्यवस्था प्रणाली है जिसका स्वामित्व एक विश्वव्यापी पुस्तकालय सहकारी संस्था ऑनलाइन कंप्यूटर लाइब्रेरी सेंटर के पास है। यह पुस्तकों को दस प्रमुख समूहों जैसे प्राकृतिक विज्ञान, धर्म, भाषा, कला, भूगोल, इतिहास के अंतर्गत रखकर उन्हें अंक आंवटित करती है और फिर उपसमूहों में बांटती है। कंप्यूटर पर विषय, लेखक का नाम या पुस्तक का नाम ढूंढकर पुस्तकों को आसानी से अलमारियों में खोजा जा सकता है। कथा साहित्य को अलग से, लेखक के कुलनाम के आधार पर व्यवस्थित रूप से रखा जाता है।

ज्यादातर पुस्तकालय नि:शुल्क इंटरनेट सुविधा प्रदान करते हैं। वेस्टर्न वाशिंगटन यूनिवर्सिटी की 21 वर्षीय छात्रा नटाली कूपर बेलिंगहम लाइब्रेरी की शोध और इंटरनेट सुविधाओं का उपयोग करती हैं

शरमन सी. पिसाक © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

ज्यादातर कस्बों में निःशुल्क सार्वजनिक पुस्कालय अमेरिकियों की स्वतंत्र रूप से सूचना संसार तक पहुंच बनाते हैं और लोकतंत्र को मजबूत बनाने में मदद करते हैं।

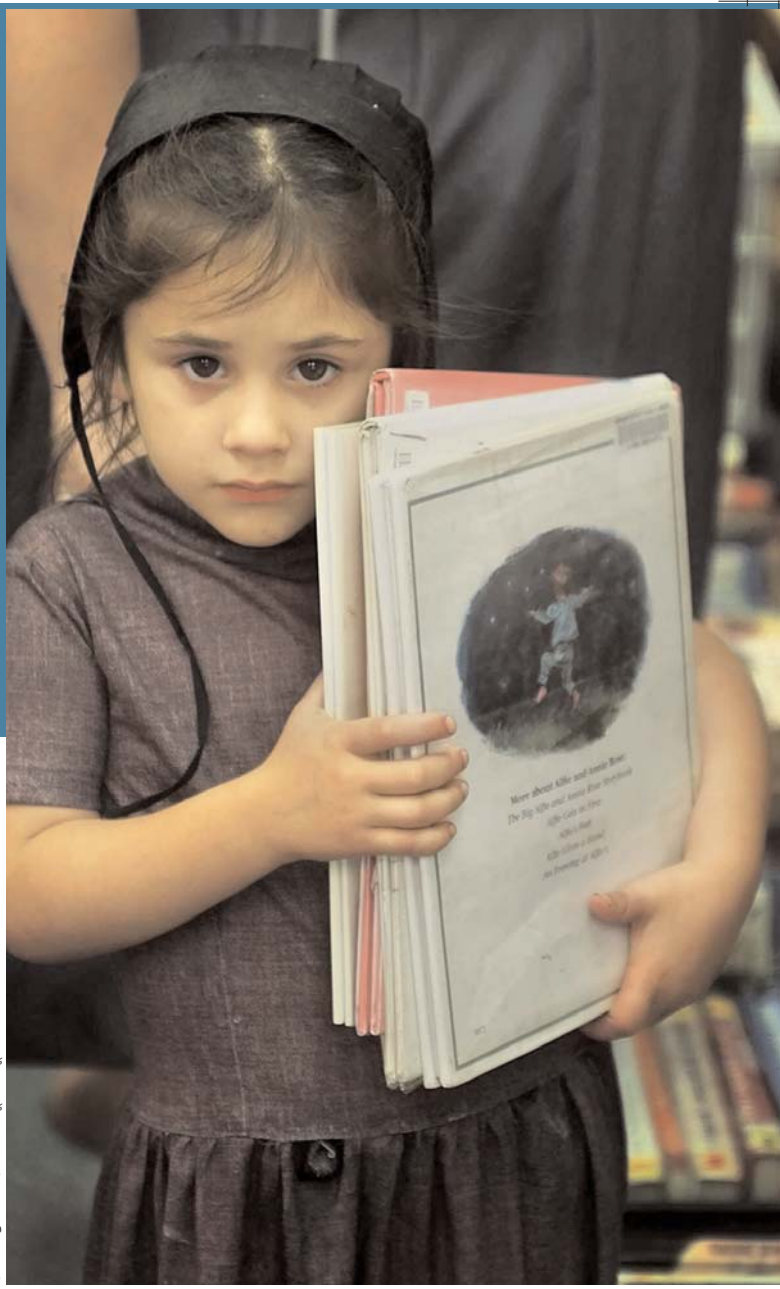

एमी सैंपेट्रा © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

बाएं: उटा की साल्ट लेक सिटी लाइब्रेरी में कैमि मोफट अपनी पसंदीदा किताब तलाशते हुए।

दाएं: पार्कमैन (ओहियो) की गीउगा काउंटी पब्लिक लाइब्रेरी में अमिश समुदाय की कैथी बॉर्कहोल्डर अपनी चुनी हुई किताबों के साथ।

क्योंकि निजी तौर पर इन सुविधाओं को हासिल करना उनके बूते के बाहर है। वह कहती हैं, ''लाइब्रेरी ने मेरे लिए चैट रूम और रोचक वेब पृष्ठों का संसार खोला है।''

कंप्यूटर डैटाबेस ने कार्ड कैटलॉग की जगह ले ली है। पहले लाइब्रेरियन हर पुस्तक के लिए तीन कार्ड टाइप किया करते थे: लेखक के नाम से, पुस्तक के नाम से और विषय से। इन कार्डों को छोटी-छोटी दराजों में रखा जाता था। पाठक अक्सर कार्डों को पढ़ते हुए कई नए विचारों और जानकारी के स्रोतों तक पहुंच जाते थे।

अब किताबों को पाठक को जारी करने की व्यवस्था भी कंप्यूटर के हवाले है। कई लाइब्रेरियन, अध्यापक और अभिभावक उन चेकआउट कार्डों को याद करते हैं जो किताब के पिछले कवर के अंदर की ओर लगे कागज के खांचे में डाले जाते थे। उन पर किताब को पढ़ चुकने वालों के नाम मिल जाते थे।

ऑनलाइन डैटाबेस और इंडेक्स ने पुस्तकों की खरीद और उपयोग के ढंग को भी प्रभावित किया है। पुस्तकालय के सदस्य अपनी सदस्यता कार्ड संख्या और पासवर्ड का उपयोग करते हुए अपने घर से ही पुस्तकालय की वेबसाइट का उपयोग कर सकते हैं। इससे पुस्तकालय न आ सकने वाले लोग भी पुस्तकालय की सुविधा से वंचित नहीं होते और पुस्तकालय को भी पुस्तकों की कम प्रतियां खरीदनी पड़ती हैं। बेलिंगहम की लाइब्रेरियन डायना कहती हैं कि इंटरनेट पर खुद सूचनाएं ढूंढ़ने से ज्ञान प्राप्त करने की स्वतंत्रता बढ़ती है। जीवन भर सीखते रहकर नागरिकों का निर्बाध रूप से अपने मानस का विकास कर पाना जीवंत, और पारदर्शी लोकत्रंत की नींव है। प्रख्यात अमेरिकी टेलिविजन पत्रकार वाल्टर क्रांकाइट ने कहा भी है, ''हमारे पुस्तकालयों को चलाने की लागत जो भी आती हो, एक अज्ञानी देश के (खतरे के) मुकाबले तो कम ही है।''

पुस्तकालय सूचना संसार तक पहुंच तो उपलब्ध करवाते ही हैं, बच्चों के लिए कहानी सुनाने के सत्र के अलावा यह हमारे शोर-शराबे से भरे तेज रफ्तार संसार से राहत भी दिलाते हैं। छात्र डेव हुईं याद करते हैं कि सिएटल के उनके घर की आपाधापी से बच कर पुस्तकालय जा पाना कितना सुखद था। वह कहते हैं, '' वहां जाकर पढ़ना या फिर कल्पना की पतंग की डोर ढीली छोड़ देना अच्छा लगता था। सार्वजनिक पुस्तकालय ने मुझे महसूस कराया कि मैं पढ़ने वाला छात्र हो सकता हूं। मुझमें आशा जगाई कि मैं अपने सपने पूरे कर पाऊंगा। हमारे सार्वजनिक पुस्तकालय ने मुझे उच्च शिक्षा पाने के लिए प्रेरित किया।''

लाइब्रेरियन पुस्तकप्रेमी होते हैं, लेकिन इसके अलावा उन्हें एक जटिल संगठन का संचालन करना होता है। वे सूचना की व्याख्या करते हैं, शोध करते हैं, बढ़िया जनसंपर्क बनाए रखते हैं और कर्मचारियों का प्रबंधन करते हैं। स्नातक या उसके समकक्ष उपाधि और अंग्रेजी के अलावा एक और भाषा पढ़ पाने की क्षमता रखने वाले अमेरिकन लाइब्रेरी असोसिएशन के बोर्ड ऑफ एजुकेशन द्वारा प्रमाणित पुस्तकालय प्रशिक्षण विद्यालयों में प्रवेश लेकर लाइब्रेरियन बन सकते हैं। ☐

लेखिका: *कैटलिन आर. मैक्वी बेलिंगहम, वाशिंगटन स्थित वेस्टर्न वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में राजनीतिशास्त्र की छात्रा हैं।*